International Journal of Information Movement Vol.5 Issue VIII (December 2020)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 9-17

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में धार्मिक लोक–विश्वास के विविध पक्ष

डॉ॰ ऋषिपाल,
अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी–विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय,
कौल, कैथल।
Email: rishipalsuman@gmail.com

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय लोक जीवन, समाज एवं साहित्य में एक नई चेतना शुरू हुई। स्वतन्त्रता के बाद मानव को वैज्ञानिक एवं तकनीकी सुविधाओं ने एक नया रास्ता दिखाया। भारत देश निश्चित ही एक सांस्कृतिक संक्रान्ति से आत्मसात हुआ। इसका कारण था कि एक तरफ प्राचीन काल से पालित–पोषित भारतीय परम्पराओं को लगाव था, दूसरी तरफ पाश्चात्य संस्कृति का आकर्षण। अनेकों अनुभवों से ऐसा प्रतीत हुआ कि हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। ''पाश्चात्य, विशेषतः अमेरिकी संस्कृति के निरन्तर बढ़ते हुए प्रभाव से हमारी संस्कृति की चूलें हिलती जा रही हैं।''[1] प्राचीन काल से मानवीय गरिमा हमारी संस्कृति, हमारे धर्म के मूलभूत तत्त्व हैं। हमेशा से ईश्वरीय कल्पना हमारे दृष्टिकोण का अटूट हिस्सा रही है। आधुनिक युग में भौतिकवाद की चकाचौंध में जब हमारी जीवन पद्धति बदल रही है और ''मनुष्य एवं उसका सत्य बदल रहा है तो उसकी आध्यात्मिक, पारमार्थिक और ईश्वर तथा धर्म विषयक धारणाएँ भी बदलनी चाहिए। यद्यपि ऐसा माना जाता है कि विज्ञान की उन्नति के साथ–साथ मानव का मूल्य बढ़ता गया है, मानवेत्तर का मूल्य घटता गया है।''[2] भारत एक धार्मिक देश है, धर्म के प्रति लोगों की अटूट श्रद्धा है। 'मनुस्मृति' में वेद और स्मृति में निहित आचार–व्यवहार को ही धर्म कहा जाता है।

धार्मिक लोक विश्वास भारतीय लोक जीवन में प्रचलित रीति–रिवाज एवं परम्पराएँ ही होती हैं। ये रीति–रिवाज एवं परम्पराएँ लोक विश्वास का रूप धारण कर के लम्बे काल से शनैः–शनैः लोक सभ्यता के साथ लोक जीवन में सम्मिलित हो जाती हैं। इनका स्थान सामान्य जन की जीवन प्रणली में अपना स्थायी स्थान बना लेता है। समय के परिवर्तनानुसार ये रीति–रिवाज और परम्पराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रहती हैं। ये लोक–विश्वास लोक–जीवन की तरह बहुत ही व्यापक और विस्तृत होते हैं। भारतीय लोक–जीवन में ये लोक विश्वास लोगों की चेतना का अभिन्न अंग होते हैं। इन लोक–विश्वासों का आधार तर्क अथवा विवेक नहीं, बल्कि वे अविच्छिन्न परम्पराएँ एवं रूढ़ियाँ हैं, जिनका इतिहास आदिम मानव से जुड़ा हुआ है। ये लोक–विश्वास ही युग–विशेष में सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग हुआ करते हैं। इन लोक–विश्वासों को लोगों के मनों एवं प्राणों में बसने के लिए लम्बा समय लग जाता है। युगों के परिवर्तन और बदलाव के साथ–साथ ये लोक–विश्वास और मान्यताएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते रहते हैं। महादेवी वर्मा के अनुसार, ''समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जिसमें स्वार्थों की सार्वजनिक रक्षा के लिए अपने विषम आचरणों में साम्य उत्पन्न करने वाले कुछ सामान्य नियमों से शासित होने का समझौता कर लिया है।''[3]

समाज में अनेक क्षेत्र एवं आयाम होते हैं। समाज बहुत ही विस्तृत, व्यापक एवं असीमित होता है। समाज में अलग–अलग धर्म को मानने वाले एवं विभिन्न आस्थाओं और परम्पराओं का विश्वास करने वाले लोग रहते हैं। ये लोग पढ़े–लिखे भी होते हैं व अनपढ़ भी होते हैं। वे गांव या शहरों में गरीब या अमीर के साथ अपना जीवन यापन करते हैं। ऐसे समाज में रहने वाले लोगों के मन में विश्वास एक समय में नहीं बनते। उनके जीवन में विश्वास बनने में बहुत समय लगता है। हम यह भी कह सकते हैं कि पीढ़ी–दर–पीढ़ी बदलने के साथ–साथ युगों–युगों तक धीरे–धीरे ये विश्वास, रीति–रिवाज, परमपराएँ परिपक्व होती हैं और समाज में अपनी छाप छोड़ती हैं। समाज एवं लोक–संस्कृति का गहरा सम्बन्ध उसमें

प्रचलित विश्वासों और मान्यताओं से रहा है। जिस समाज की संस्कृति का इतिहास जितना दीर्घकालीन होता है, उसमें प्रचलित विश्वास एवं मान्यताएँ भी उतनी ही अधिक होती हैं। भारतीय लोक संस्कृति का इतिहास दीर्घकालीन है। अतः यहाँ लोक–मान्यताओं की संख्या अधिक है। भारतीय समाज के अंतःकरण में कुछ लोक–विश्वास तो इतनी गहराई से प्रविष्ट हो चुके हैं कि संस्कृति के क्षेत्र में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान हो गया है। धार्मिक लोक–विश्वास पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आती हुई परम्परा से विरासत में मिली हुई सम्पत्ति होते हैं। ये धर्म के परिप्रेक्ष्य में लोक–जीवन को किसी–न–किसी रूप में प्रभावित करते हैं। भारतीय लोक–जीवन में धर्म को ही जीवन का आधार माना गया है। ऐसा विश्वास है कि जो व्यक्ति धर्म की रक्षा करता है, धर्म भी उसकी रक्षा करता है।

धार्मिक–विश्वास भारतीय लोक जीवन की अमूल्य निधि हैं। आधुनिक हिन्दी काव्य में भी लोक–विश्वासों एवं लोक–मान्यताओं का चित्रण कवियों द्वारा किया गया है। अनेक कवियों द्वारा आधुनिक हिन्दी काव्य में धार्मिक लोक–विश्वासों को लेकर पूजा, व्रत, दान, जप–तप, हवन, प्रार्थना, गंगा–स्नान, तुलसीदान, दीपदान, पिण्डदान और यज्ञ आदि के रूप में वर्णन मिलता है। भारतीय लोक–जीवन में पूजा का स्थान धार्मिक लोक–विश्वासों में सर्वोपरि है। भारतीय लोगों में अपने देवी–देवताओं के प्रति अटूट श्रद्धा है। वे उनकी पूजा–अर्चना बहुत ही पुनीत भाव से करते हैं। किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व वे अपने देवी–देवताओं के मन्दिर में सिर झुकाकर पूजा करते हैं। गाँवों में सभी लोग मिलकर जिस देवता की पूजा करते हैं, उसे ग्राम देवता कहा जाता है। समाज में किसी भी सम्प्रदाय द्वारा किसी देवता के प्रति श्रद्धा या पूजा की जाती है, तो उसे गृह देवता कहते हैं। सुमित्रानन्दन पंत 'ग्राम्या' में लोगों द्वारा ग्राम देवता की पूजा को लेकर लिखती हैं कि –

''राम राम

हे ग्राम्य देवता यथा नाम

शिक्षक हो तुम मैं, शिष्य तुम्हें सविनय प्रणाम।''[4]

भारतीय लोक जीवन में देवी–देवताओं के प्रति लोगों के मन में अगाध श्रद्धा होती है। भारतीय समाज में सभी लोग प्रायः अपने–अपने देवी–देवताओं के मन्दिर में जाकर पत्थर की मूर्ति के समक्ष सिर झुकाकर नमन करते हैं। वे श्रद्धाभाव से पूजा–पाठ करते हैं व मन्दिरों में बनी देवी–देवताओं की मूर्ति के सामने सिर झुकाकर अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए मिट्टी को अपने मस्तक पर लगाते हैं। कवि उपेन्द्र नाथअश्क –'दीप जलेगा' कविता में लिखते हैं कि –

''पत्थर सा मित्र हुआ है, तू पूज पूज कर पत्थर।

सब शांति गंवा बैठा है, नित शान्ति–पाठ जप तप कर।

क्या सीख लिया है तूने, ईंटों पर शीश झुकाना।

दहलीज़ों की मिट्टी को, मस्तक का तिलक बनाना।''[5]

धार्मिक लोक विश्वास को लेकर भारतीय लोक–जीवन में समस्त नर–नारी पूजा–अर्चना के समय अपने देवी–देवताओं की प्रार्थना करते हैं व अपनी मनोकामनाओं को पूरा करने की इच्छा प्रकट करते हैं। अपने आराध्य को प्रसन्न करने के लिए वे मन्दिरों में आरती करते हैं व दीप जलाते हैं। पूजा–अर्चना के समय साधक अपने इष्ट देवी–देवताओं के समक्ष घी का दीपक व कपूर जलाते हैं। अज्ञेय लिखते हैं –

''मेरे आरती के दीप,

झिपते–झिपते बहते जाओ सिंधु के समीप।''[6]

अपने–अपने कार्यों पर जाने से पहले भारतीय लोक–जीवन में नर–नारी सुबह और शाम लोग घरों व मन्दिरों में आरती करके प्रभु को प्रसन्न करते हैं। भगवान के प्रति उनके मनों में अपार श्रद्धा होती है। उनका विश्वास है कि पूजा–अर्चना करके वे अपने कष्टों का परित्राण कर सकते हैं। 'छुटता हुआ घर' कविता में प्रकाश मनु कवि लिखते हैं कि –

''वे लाइनों में खड़े हैं,

सामने है धुआं झीना–झीना धुआं

आरती के धूप–दीपों का।''[7]

भारतीय समाज में ऐसा माना जाता है कि किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व माँ सरस्वती की वंदना एवं गणेश की पूजा अनिवार्य है। शिक्षित लोग अपने घरों में सरस्वती की पूजा करते हैं। किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित किया जाता है। माँ सरस्वती से आशीर्वाद मांगकर ही कार्य को शुरू किया जाता है। लोक–विश्वास है कि सरस्वती विद्या की देवी है, इसकी पूजा करने से अज्ञान रूपी अन्धकार समाप्त हो जाता है और ज्ञान रूपी प्रकाश चारों ओर फैल जाता है। डॉ. सारस्वत मोहन लिखते हैं कि –

''सुखदे! शुभदे! शारदे! सुन ले आर्त पुकार।

चरण शरण तब आ गया, मार भले पुचकार।।''[8]

अलग–अलग धर्मों व क्षेत्रों के लोगों की आस्था अपने देवी–देवताओं के प्रति अटूट होती है। सावन के महीने में सभी लोग भगवान शंकर की पूजा करते हैं। मन्दिर में जाकर शिव की मूर्ति के समक्ष फूल चढ़ाकर नत–मस्तक होते हैं व अपनी मंगल की कामना करते हैं। रघुवीर शरण 'मित्र' के काव्य 'मानवेन्द्र' में लोगों की शिव के प्रति आस्था का उल्लेख मिलता है –

''श्रद्धा से मन्दिर में पहुंची, पूजा परमेश्वर को।

भक्ति भाव से फूल चढ़ाये, पिला भांग शंकर को।

मन्दिर मन्दिर फिरी घूमती, मूर्ति मूर्ति को देखा।

छाप छोड़ती गई राह में बना बनाकर रेखा।''[9]

भगवान की सर्वोत्कृष्ट रचना मानव ही है। आत्मा ही परमात्मा है। हम जीवन में जैसे कर्म करते हैं, उसी के अनुसार हम अगला जीवन भी सुनिश्चित कर पाते हैं। मनुष्य को हमेशा ईश्वर का ध्यान करना चाहिए, क्योंकि कोई भी जीवन स्वयं के जीवन के कर्म फलों से नहीं बच सकता। सुख में भी सभी ईश्वर को याद रखें, ऐसा होना जीवन में लाभकारी होता है। बहुधा दुःख, संकटों के कारण ही हम भगवान को याद करते हैं। केदारनाथ सिंह लिखते हैं कि –

''मेरे ईश्वर!

मुझे क्या करना चाहिए इस

दिन का जिसमें कोयला नहीं है

मुझे क्या करना चाहिए इस ठंड का

जो बराबर बढ़ती जा रही है

मेरे ईश्वर!

क्या मेरे लिए इतनी भी नहीं कर सकते

कि इस ठंड से अकड़े हुए शहर को बदल

दो एक जलती हुई बोरसी में।''[10]

बाजारवादी संस्कृति में सभी पौराणिक मान्यताएँ एवं धारणाएँ बदल चुकी हैं। भारतीय लोक जीवन में युगों से उदार, परोपकार, ईमानदारी, मर्यादा, त्याग एवं समर्पण आदि मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों का बोलबाला रहा है। लेकिन वैश्वीकरण के दौर में लोग आत्म केन्द्रित एवं स्वार्थी प्रकृति के बन गए हैं। वे अपने तक ही सीमित हैं। मानवता व सामाजिक मर्यादाओं की वर्तमान में लोग अवहेलना ही करते नजर आते हैं। अपनी स्वार्थसिद्धि एवं इच्छाओं की पूर्ति हेतु ही वे भगवान से प्रार्थना करते दिखते हैं। डॉ॰ ओम प्रकाश भाटिया की कविता में इसका उदाहरण मिलता है –

''कुछ लोग मेरी

होने वाली मौतों के

शीघ्र घटित होने की 'प्रार्थना' करते हैं

और मैं प्रार्थना करता हूँ

चुनावों के लिए

क्योंकि पार्टियों के झंडे

कच्छे बनाने के काम आ सकते हैं।''[11]

आधुनिक समाज में धार्मिक स्थानों पर बहुत से पाखंडी साधु–संत या ब्राह्मण लोगों को भ्रमित भी करते हैं। बहुत से धर्माधिकारी तो लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ भी करते हैं। उनका धर्म के नाम पर अन्धविश्वासों का गोरखधंधा खूब फलता–फैलता है। अनेक बार तो वे भक्तों का शोषण भी करते हैं। जन–सामान्य की भावनाओं की वे तनिक भी चिन्ता नहीं करते। 'कई अन्तराल' कविता में कवि विनय लिखते हैं कि –

''प्रार्थना की यह कौन सी विधि है

जिसमें कोने से खड़ा पुजारी

समर्पित विश्वास की चोटी पहचानता है,

पर चुप है... ।''[12]

प्राचीन काल से भारतीय लोक–जीवन में अनेक ऐसे पौराणिक प्रसंग मिलते हैं, जब राजाओं को भी जप–तप करना पड़ा। मंत्र में अचूक शक्ति होती है। कठिन से कठिन कार्य भी जप–तप–मंत्र के द्वारा किया जा सकता है। राजा 'सगर' भी आकाश से गंगा लाना चाहते थे। वे जप–तप–मंत्र आदि का सहारा लेते हैं लेकिन सफल नहीं होते। 'भागीरथी' में सरूप सैलानी कहते हैं कि –

''नभ से गंगा को लाने में

चिंतातुर थे सगर निरन्तर

लेकिन विधिवत् तप तंत्र बिन

निष्फल थे सब जंत्र–मंत्र।''[13]

भारतीय समाज में लोगों के मन में भक्ति व धर्म के प्रति अटूट आस्था है। प्रायः सभी धर्मों के लोग सुबह–सवेरे स्नान आदि के उपरान्त अपने–अपने घरों में पूजा–पाठ, भक्ति, साधना आदि कर्म करते हैं। उनकी दिनचर्या सही ढंग से पूरी हो व सुखद परिणाम मिलें, इसके लिए वे कठोर से कठोर तपस्या भी करते हैं –

''किया तप, नीचे जलाकर आग

बह गया प्रस्वेद बनकर, राग

द्वेष भी मुझ में नहीं अवशिष्ट

मुझे केवल लोक–मंगल इष्ट।''[14]

धर्म मानव को कर्त्तव्य परायणता और निष्ठा प्रदान कराता है। अपने जीवन के मंगल के लिए मनुष्य धर्म–कर्म से जुड़ता है। धार्मिक लोकविश्वास एवं भावनाएँ भारतीय लोकमानस की अमूल्य निधि हैं। कठिन तप करके वह अपने जीवन की समस्याओं से छुटकारा पाना चाहता है। तप करने से मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही वह जीवन में ऊर्जा प्राप्त करने व साधनों को प्राप्त करने के लिए भी तप करता है –

''कर रहा तप शूद्र कोई

अधोमुख दण्डक गहन में

स्वर्ग का सुख लूटने की

लालसा को लिए मन में

चाहता है एक दिव्य कृपाण

किन्तु जायेंगे उसी के प्राण।''[15]

भारतीय समाज में ऐसी धारणा है कि लोक विश्वास जीवन के अनेक अवसरों पर किसी–न–किसी रूप में सहायक सिद्ध होते हैं। धार्मिक लोक–विश्वास भारतीय लोक–जीवन की अमूल्य निधि हैं। ये लोक–विश्वास पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती हुई परम्परा से विरासत में मिली हुई सम्पत्ति होते हैं। पूजा–अर्चना के साथ–साथ मन्त्रों में भी बहुत शक्ति होती है। भारतीय लोक–जीवन में ऐसी मान्यता एवं विश्वास है कि मन्त्र मनुष्य के जीवन में बड़ी से बड़ी बाधा एवं समस्या का निराकरण कर सकते हैं। 'मछली घर' कविता में इसका सुन्दर उदाहरण मिलता है –

''साधकों की भीड़ में से कोई

मंत्र फूंक कर तिल मारता है

अचूक

गेहूँअन लड़खड़ाता है

मूर्छित होता है

प्याले में वापस चला जाता है

साधक अट्टाहस करते हैं

एक दौर हुआ।''[16]

भारतीय समाज में वर्तमान युग के लोग अन्धविश्वासों में लिप्त, कार्यसिद्धि के लिए धर्मगुरुओं की परिक्रमा भी करते नज़र आते हैं। मन्त्रों में बहुत अधिक शक्ति होती है। पौराणिक कथाओं में भी इसका उल्लेख मिलता है। विश्वकर्मा ने नन्दा देवी के क्रीड़ा प्रसादों की रचना के लिए खम्भे ही खम्भे रच डाले, किन्तु जब विधि से ईर्ष्या वश न देखा गया तो मन्त्र शक्ति द्वारा खम्भों को वृक्षों के रूप में परिणत कर दिया। जगदीश गुप्त की कविता 'हिमबद्ध' में इसका सुन्दर उदाहरण मिलता है –

''नन्दा देवी के क्रीड़ा प्रसादों की

रचना करने को स्वयं विश्वकर्मा ने

खम्भे ही खम्भे जगह जगह रच डाले

सर्जन संकल्पों में जाने–अनजाने

उनकी नभ–भेदी गर्वित ऊंचाई को

जब विधि से देखा नहीं गया ईर्ष्यावश

निज मंत्र शक्ति से उसने उन स्तम्भों को

परिणत कर डाला तरुओं में अभ्रंकश।''[17]

अन्धविश्वासों के कारण दुःखी मनुष्य कई बार अपनी निराशा के कारण दूसरों को मन्त्रों से बांध देता है। वह निराशा में डूबकर हताशा में दूसरों से ईर्ष्या करने लगता है। फिर तन्त्र–मन्त्र विद्या के बल पर अपनी ईर्ष्यावश दूसरों पर मन्त्रों के माध्यम से प्रहार भी करता है। प्रकाश मनु की 'कविता और कविता' में एक सुन्दर उदाहरण मिलता है –

वह अक्सर दुःखी और निश्चित सा

बुदबुदाता रहता

कभी–कभी यह भी लगने लगता

कि वह ठोस, भयानक और बेचूक मंत्र सीख रहा है

और सारी धरती की एक ही बार आहुति देगा।''[18]

मृत्यु अटूट सत्य है। जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु निश्चित है। भारतीय लोक–जीवन में अन्धविश्वास है कि आदमी की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा प्रेत बन जाती है। वह आत्मा भटकती रहती है। गाँवों में बूढ़ी स्त्रियाँ डायन और प्रेतनियों की कहानियाँ बच्चों को सुनाकर चौंकाती रहती हैं। प्रकाश मनु की 'कविता और कविता के बीच' मंत्र सम्बन्धी लोक–विश्वास का सुन्दर उदाहरण दिखाई देता है–

''छूमंतर के खेल, कहानियां परियों की

सुनाती चाची सुमित्रा, बंगले वाली

मारती मंतर, सिंदूरी चावल

कौओं को चुगाती, लोग कहते डायन–प्रेतनी।''[19]

विवाह एक ऐसा बंधन है जिसका निर्वहन वर–वधू विश्वास के साथ आजीवन करते हैं। भारतीय लोक–जीवन में शादी–ब्याह के शुभ अवसर पर पण्डित वर और वधू दोनों को मंत्र पढ़कर वचनों से एक दूसरे के लिए आजीवन बन्धनों में बांध देता है। वह इस शुभ अवसर पर वर–वधू दोनों को आशीर्वाद देकर व अग्नि को साक्षी मानकर दोनों को पवित्र शादी के बन्धन में बांध देता है। मन्त्रों के उच्चारण से पण्डित सभी देवी–देवताओं को प्रसन्न करके वर–वधू को आशीर्वाद भी दिलाता है। 'जन नायक' में इसका सुन्दर उदाहरण मिलता है –

''ऊँचे स्वर से मन्त्र बोलकर, पण्डित ने फेरे फिरवाये।

अग्नि–ज्योति के आगे उनको, जीवन के दर्शन करवाये।

वर ने वचन दिये कन्या को, 'बा' ने वर से वचन भर लिये।

दोनों हृदय एक स्वर में थे, दिल से कौल करार कर दिया।''[20]

भारतीय लोक जीवन में विश्वास है कि गंगा, जमुना आदि में स्नान करके पूजा, अर्चना आदि से बहुत पुण्य प्राप्त होता है। पौराणिक ग्रन्थों में ऐसे संकेत मिलते हैं कि गंगा की उत्पत्ति ब्रह्मा के कमण्डलु से हुई है। राजा भगीरथ अपनी कठोर तपस्या के कारण गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लेकर आए, ऐसी लोक–जीवन में धारणा बनी हुई है। राजा भगीरथ के नाम से जोड़कर ही गंगा का नाम 'भागीरथी' लिया जाता है। ऐसी मान्यता एवं लोक–विश्वास है कि गंगाजल में स्नान मात्र से ही मनुष्य निष्पाप हो जाता है। 'भागीरथी' कविता में इसका उल्लेख मिलता है –

''आप्लावित हो उत्तम जल से, स्वर्ग गये पित्तर निष्पाप

भागीरथी की कृपा से, विनष्ट हुआ था अभिशाप।''[21]

गंगा को भारतीय समाज में आदर एवं निष्ठा के साथ पूजा जाता है। भारतीय समाज में गंगा को पवित्र एवं माँ के समान मानते हैं। लोक–विश्वास है कि गंगा में स्नान करने व पूजा अर्चना से पुण्य की प्राप्ति होती है। लोगों के मन में गंगा के प्रति विशेष श्रद्धा का भाव भरा रहता है। गंगा का उच्चारण करने मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। पन्त की कविता 'ग्राम्या' में इसका एक सुन्दर चित्रण दिखाई पड़ता है –

''विश्वास–मूढ़, निसंशय–मन करने आये थे

पुण्यार्जन, युग–युग से मार्ग–भ्रष्ट

जनगण इनमें विश्वास अगाध अटल

इनको चाहिए प्रकाश नवल भर सके

नया जो इनमें बल। ये छोटी बसती

में कुछ क्षण भर गये आज जीवन

स्पन्दन प्रिय लगता जनगण–सम्मेलन।''[22]

गंगा जल को पवित्र जल माना जाता है। भारतीय लोक–जीवन में गंगा जल का भी बहुत महत्त्व है। यहाँ तक की मृत्यु शैया पर मनुष्य के मुख में भी गंगा जल से उसको तृप्त कराकर आजीवन उसके द्वारा किये हुए पापों से उसको मुक्ति दिलाई जाती है। ऐसा करने से मृत आत्मा की सद्गति हो जाती है –

''उस महा भस्म–शशि सम, सब हुआ करेंगे तर्पित

धोकर सब पाप मलिनता, तब होंगे स्वर्ग समर्पित।''[23]

गणेश हिन्दु धर्म के आराध्य देवता हैं। भारतीय समाज में लोक विश्वास है कि किसी भी कार्य के शुभारम्भ से पहले गणेश की पूजा की जाती है। 'गणेश' की पूजा–अर्चना के बाद ही हम अन्य देवी–देवताओं का स्मरण करते हैं। 'जन नायक' में इसका सुन्दर उदाहरण मिलता है –

''हिन्दू मुसलमान के दीपक! मानवता के धन मृत्युंजय,

'श्री गणेश शंकर विद्यार्थी', अमर! तुम्हारी बार–बार जय।

पास शोक प्रस्ताव हुए जो – वे ही अब स्मृति–चिह्न शेष हैं,

पूजा में सबसे पहले ही – बैठाये जाते गणेश हैं।''[24]

हमारे देश के लोग आध्यात्मिक प्रकृति के हैं। वे बहुत से देवी–देवताओं में अटूट विश्वास रखते हैं। ग्रामीण अंचलों में प्रायः देवी–देवताओं के मन्दिर बने होते हैं। उन मन्दिरों में अलग–अलग देवी–देवताओं विशेष की मूर्ति स्थापित की जाती है। विशेष पर्व एवं अवसरों पर उनकी जन समूह पूजा करता है। ग्रामीण अंचलों में अनेक देवता अत्यन्त प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय भी हैं, प्रायः जिनकी पूजा बड़ी भक्ति भावना से की जाती है। इन देवताओं के मन्दिर प्रायः गाँव के बाहर किसी मुख्य स्थान पर होते हैं अथवा किसी ऐसे सार्वजनिक स्थान पर इनकी प्रतिमा स्थापित की जाती हैं, जहाँ गाँव का प्रत्येक व्यक्ति आसानी से पहुँच सके। जो देवता गाँव के सभी सर्व साधारण लोगों से पूजा जाता है, उसे ग्राम देवता कहा जाता है परन्तु जिस देवता की पूजा किसी विशेष समाज या सम्प्रदाय के विशिष्ट व्यक्तियों के द्वारा की जाती है, उसे गृह देवता कहते हैं।''[25] पुष्पा मानकोटिया अपनी काव्य रचना 'तुम्हारे पहनाए पंख' में लिखती हैं –

''मुझे तो बोने हैं, अहसास उसमें

उखाड़ फैंकना है, अपना बौनापन

और हर चौराहे पे, श्री गणेश की प्रतिमा लगानी है।''[26]

सारांशतः हम कह सकते हैं कि लोक–विश्वास बहुत सर्वमान्य, व्यापक और विस्तृत होते हैं। आरम्भ से ही भारत देश में लोक सभ्यता के साथ–साथ लोक–जीवन में अनेक प्रकार के लोक–विश्वास, परम्पराएँ और मान्यताएँ प्रचलित रही हैं। ये लोक–विश्वास ही युग विशेष में सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग हुआ करते हैं। हालांकि बाजारवादी संस्कृति के कारण आज लोक विश्वासों का विकृत–विकसित या परिवर्तित–परिवर्द्धित रूप ही हमारे सामने है, परन्तु इतना स्वीकार कर लेना चाहिए कि लोक–विश्वास ही विभिन्न परम्पराओं का सृजन करते हैं। लोक–विश्वास लोक–जीवन के प्राण हैं। इन लोक–विश्वासों का अर्थ है जन–विश्वास। अतः हम विश्वास से कह सकते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में अनेक कवियों द्वारा उनकी कविताओं में धार्मिक विश्वासों को लेकर पूजा सम्बन्धी, प्रार्थना सम्बन्धी, गंगा स्नान सम्बन्धी एवं देवी देवताओं की पूजा सम्बन्धी लोक–विश्वासों की अभिव्यक्ति हुई है। अतः हम कह सकते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों ने लोक–विश्वासों के कतिपय पक्षों को अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। लोक विश्वासों से स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता ओत–प्रोत है, क्योंकि यह कविता लोगों और उनके जीवन से जुड़ी कविता है।

सन्दर्भ

1. अमृत राज, सहचिंतन, पृ॰ 150
2. अज्ञेय, हिन्दी साहित्य, एक आधुनिक परिदृश्य, पृ॰ 18

3. डॉ. प्रमोद सिन्हा, छायावादी कवियों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण, पृ. 135
4. सुमित्रा नन्दन पंत, ग्राम्या, पृ. 60
5. उपेन्द्रनाथ अश्क, दीप जलेगा, पृ. 123
6. अज्ञेय चिन्ता, पृ. 114
7. प्रकाश मनु, छुटता हुआ घर, पृ. 75
8. डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी' मनीषी सतसई, पृ. 20
9. रघुवीर शरण 'मित्र' जननायक, पृ. 138
10. केदारनाथ सिंह, यहाँ से देखो, पृ. 68
11 डॉ. ओम प्रकाश भाटिया, 'अराज' दो बेटे तीन इंसान, पृ. 57
12. विनय, कई अन्तराल, पृ. 65
13. सरूप सैलानी, भागीरथी, पृ. 55
14. जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ. 63
15. वही, पृ. 11
16. विजयदेव नारायण साही, मछली घर, पृ. 48
17. जगदीश गुप्त, 'हिमबिद्ध', पृ. 74
18. प्रकाश मनु, देवेन्द्र कुमार, कविता और कविता के बीच, पृ. 51
19. वही, पृ. 98–99
20. रघुवीर शरण 'मित्र', जननायक, पृ. 39
21. सरूप सैलानी, भागीरथी, पृ. 101
22. सुमित्रा नन्दन पंत, ग्राम्या, पृ. 11
23. सरूप सैलानी, भागीरथी, पृ. 102
24. रघुवीर शरण 'मित्र', जननायक, पृ. 313
25. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृ. 193
26. पुष्पा मान कोटिया, तुम्हारे पहनाए पंख, पृ. 15